IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्थिति एवं शैक्षिक उपलब्धि का सहसम्बन्धात्मक अध्ययन

Amar Bahadur Yadav

Dr.Aradhana Pandey

सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्थिति एवं शैक्षिक उपलब्धि का सहसम्बन्धात्मक अध्ययन के संदर्भ में है। इस शोध अध्ययन में उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् से सम्बद्धता प्राप्त माध्यमिक स्तर के विद्यालय के कक्षा ग्यारहवीं के 150 विद्यार्थियों का चयन सरल यादृच्छिक विधि से किया गया। प्रस्तुत शोध का परिसीमन प्रतापगढ़ जनपद में उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के अंतर्गत संचालित माध्यमिक स्तर के कक्षा ग्यारहवीं के विद्यार्थी तक सीमित है। सामाजिक–आर्थिक स्थिति से सम्बन्धित आँकड़े एकत्रित करने के लिए शोधकर्ता ने स्वयं 'सामाजिक–आर्थिक स्थिति' मापनी का निर्माण किया है। शैक्षिक उपलब्धि का निर्धारण विद्यालयों की पूर्ववर्ती कक्षा 10वीं में प्राप्त अंकों के आधार पर किया गया है। सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, कार्ल पियर्सन सहसम्बन्ध गुणांक व परीक्षण का प्रयोग किया गया है। शोध परिणाम में पाया कि उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्थिति एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध है ।

मुख्य बिन्दु–

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् के विद्यार्थी, सामाजिक–आर्थिक स्थिति एवं शैक्षिक उपलब्धि ।

प्रस्तावना –

उ०प्र० माध्यमिक शिक्षा परिषद एक परीक्षा नियामक संस्था है। इसका मुख्यालय प्रयागराज में है यहां विश्व की सबसे बड़ी परीक्षा को सुचारू रूप से संचालित करने वाली संस्था है। परिषद् ने 10+2 शिक्षा प्रणाली को अपनाया है। इसकी स्थापना वर्ष 1921 में इलाहाबाद (आधुनिक प्रयागराज) में संयुक्त प्रान्त वैधानिक परिषद् के एक अधिनियम द्वारा की गई थी। इसका मुख्य कार्य हाईस्कूल एवं इंटरमीडिएट की परीक्षा को शुचिता के साथ संचालन करना होता है ,साथ ही साथ राज्य में स्थित नए विद्यालयों को मान्यता देना, ,हाईस्कूल एवं इंटरमीडिएट स्तर के लिए पाठ्यक्रम एवं पुस्तकें भी निर्धारित करता है ।

शिक्षा के सामान्यतः तीन स्तर हैं यथा–प्राथमिक शिक्षा ,माध्यमिक शिक्षा एवं उच्च शिक्षा। प्राथमिक शिक्षा, शिक्षा को प्राप्त करने की पहली सीढ़ी है जो शिक्षार्थी को शिक्षा के रास्ते पर ले जाती है। उच्च शिक्षा , शिक्षा प्राप्त करने की अंतिम सीढ़ी है जो शिक्षार्थी को सामाजिक एवं आर्थिक रूप से संपन्न करती है। वस्तुतः माध्यमिक शिक्षा पूरी शिक्षा व्यवस्था की रीढ़ की हड्डी होती है।

सामाजिक–आर्थिक स्थिति , सामाजिक–आर्थिक पैमाने पर किसी व्यक्ति की स्थिति है जो आय ,शिक्षा , व्यवसाय ,प्रतिष्ठा और निवास स्थान जैसे सामाजिक और आर्थिक कारकों के संयोजन से निर्धारित होती है। सामाजिक–आर्थिक स्थिति को तीन आयामों के सम्मिलित रूप से परिभाषित किया जाता है–पारिवारिक आय ,माता–पिता की शिक्षा का स्तर और माता–पिता की सामाज मे सम्मान। सामाजिक–आर्थिक स्थिति में 'स्थिति' शब्द अंग्रेजी भाषा के 'स्टेटस' शब्द का हिन्दी अनुवाद है जो

यूनानी भाषा से लिया गया है। हिंदी भाषा में भी 'स्थिति' शब्द प्रस्थिति , दशा , स्तर आदि अर्थों में विभिन्न परिस्थितियों में प्रयुक्त होता रहा है। सामान्यतः यह माना जाता है कि बालक के शैक्षिक उपलब्धि में सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। आर्थिक रूप से विभिन्न बालक को न केवल शैक्षिक सुविधाओं से वंचित रहना पड़ता है बल्कि उसके शारीरिक व मानसिक विकास के लिए न्यूनतम आवश्यक मनोरंजन के साधन भी उपलब्ध नहीं हो पाते। ऐसी दशा में विद्यार्थी अध्ययन में रुचि तो रखता है किन्तु सामाजिक–आर्थिक स्थिति निम्न होने के कारण अध्ययन मे कठिनाई का अनुभव करता है। फलतः उसकी शैक्षिक उपलब्धि भी प्रभावित होती है।

शैक्षिक उपलब्धि – अध्यापक का मुख्य कार्य विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करना है। शिक्षा प्राप्त करने का सीधा सम्बन्ध सीखने से होता है। सीखने को ही अधिगम कहा जाता है। अधिगम जितना ही अधिक होगा उतना ही अधिक ज्ञानार्जन भी होगा। अधिगम का सरल अर्थ व्यवहार में हुआ परिवर्तन को कहते हैं। बालक अपने विद्यालय परिवेश व सामाजिक वातावरण से कुछ न कुछ निरन्तर सीखता रहता है। सीखने का प्रमुख केंद्र विद्यालय होता है। यहां पर शिक्षण विभिन्न प्रकार की शिक्षण प्रक्रियाओं का आयोजन करके बच्चों को ज्ञान प्रदान करते हैं। इन सभी विभिन्न प्रक्रियाओं का प्रभाव बच्चे की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है। विद्यालय में होने वाली प्रत्येक गतिविधियाँ बच्चे की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने के लिए होती है। शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य बच्चे की किसी विषय में अर्जित की हुई कुशलता से है। परिवार ,समाज व विद्यालय के लिए विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि एक महत्वपूर्ण कारक है। शैक्षिक उपलब्धि छात्रों की ज्ञान की सीमा व कुशलता को प्रकट करती है वहीं दूसरी तरफ शिक्षकों की भी कार्य–कुशलता को प्रकट करती है। छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि विद्यालय की प्रतिष्ठा को बढ़ाती है। यदि छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि संतोषजनक नहीं होती है तो विद्यालय एवं शिक्षकों के कार्य को सार्थक नहीं माना जा सकता है ।

सी. वी. गुड के अनुसार –"शैक्षिक उपलब्धि स्कूल के विषयों से उत्पन्न ज्ञान की क्षमता परीक्षांक अथवा अध्यापक द्वारा प्रदत्त अंको से मानी जाती है ।

डेवल के अनुसार – "उपलब्धि परीक्षण एक अभिकल्प है जो विद्यार्थी के द्वारा ग्रहण किए गए ज्ञान , कुशलता या क्षमता का मापन करता है ।"

इस प्रकार उपलब्धि परीक्षणों द्वारा एक निश्चित समयावधि के सीखने के पश्चात् विद्यार्थियों की समझ का मापन किया जाता है।

संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण –

Moswikiti , N. (2005) ने स्कूली बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर शिक्षा की गुणवत्ता और सामाजिक – आर्थिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन किया। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि उच्च शैक्षिक स्तर और उच्च सामाजिक–आर्थिक स्थिति के बच्चों ने निम्न शैक्षिक स्तर और निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति के बच्चों से अधिक अंक प्राप्त किए ।

Smith , Krishna Y. (2011) ने शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावकों से सम्बन्धित कुछ कारकों के प्रभाव का अध्ययन किया। निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि अभिभावकों से सम्बन्धित कुछ कारकों को तथा छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य उचित धनात्मक सहसम्बन्ध सम्बन्धित पाया गया।

Teodar , M . (2012) ने विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्थिति का उनकी स्कूल उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया। इस अध्ययन का परिणाम प्राप्त हुआ कि विद्यार्थियों का सामाजिक आर्थिक स्तर उनके स्कूल निष्पादन को प्रभावित करता है ।

Zuki , N.A.E , Thabet , A.M. Hassan , A.k. (2014) ने प्रारम्भिक स्कूल के विद्यार्थियों का शैक्षिक निष्पत्ति पर उनके साथी समूह तथा माता–पिता की सामाजिक आर्थिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन किया। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि उच्च व सामान्य सामाजिक–आर्थिक स्तर के माता–पिता के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च थी तथा निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के माता–पिता के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि निम्न थी।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

आज सार्वभौमिक शिक्षा एवं अन्य सरकारी प्रयासों के परिणाम स्वरूप बहुत बड़ी संख्या में विद्यार्थी माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में प्रवेश पा रहे हैं। माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के इन विद्यार्थियों को विद्यालयों में बनाए रखने ,रुचिकर वातावरण प्रदान करना ,गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करके इनकी शैक्षिक उपलब्धि का उन्नयन किया जा सकता है। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर अन्य सभी कारकों में से अभिभावक की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। बालकों को जब अपनी मूलभूत सुविधाएं ही प्राप्त नहीं हो पाती तो इसके शैक्षिक मार्ग पर अनेक तरह की बाधाएं उत्पन्न होने लगती हैं। इन सुविधाओं से वंचित रहते हुए इनकी रूचि शिक्षा से हटने लगती है। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर इनके माता–पिता की सामाजिक–आर्थिक स्थिति की निर्णायक भूमिका होने के कारण शोधकर्ता ने विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति एवं शैक्षिक उपलब्धि के सहसम्बन्धात्मक अध्ययन की आवश्यकता महसूस की है।

शैक्षिक शोध की महत्ता इस बात पर निर्भर होती है कि इसके द्वारा प्राप्त परिणाम के क्या शैक्षिक उपयोग हो सकते हैं। प्रस्तुत शोध के शैक्षिक महत्व निम्न प्रकार से हैं –

- प्रस्तुत शोध अध्ययन से उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि की जानकारी हो पाएगी।
- विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके सामाजिक–आर्थिक स्थिति के प्रभावों को समझने में मदद मिलेगी ।

समस्या कथन

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्थिति एवं शैक्षिक उपलब्धि का सहसम्बन्धात्मक अध्ययन ।

शोध में प्रयुक्त शब्दों का पारिभाषीकरण –

शोधकर्ताओं ने शोध अध्ययन में निम्न शब्दों को प्रयुक्त किया हैं –

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् के विद्यार्थी –

ऐसे विद्यार्थी जो उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् , प्रयागराज के द्वारा संचालित माध्यमिक स्तर के विद्यालय में अध्ययनरत् हैं ।

सामाजिक – आर्थिक स्थिति –

किसी भी व्यक्ति की सामाजिक–आर्थिक स्थिति जिस समाज में वह रहता है ,उस समाज के लोगों के बीच उसके सम्मान और शक्ति (सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक व शैक्षिक) का सूचक है ।

शैक्षिक उपलब्धि –

शैक्षिक उपलब्धि से आशय माध्यमिक स्तर के कक्षा ग्यारहवीं मे अध्ययनरत् विद्यार्थियों की पूर्ववर्ती कक्षा के प्राप्तांक हैं ।

शोध अध्ययन के उद्देश्य –

- उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना ।
- उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना
- उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्थिति एवं शैक्षिक उपलब्धि का सहसम्बन्धात्मक अध्ययन करना ।

शोध अध्ययन की परिकल्पना –

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्थिति एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध है ।

शोध अध्ययन की शून्य परिकल्पना –

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्थिति एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है ।

शोध अध्ययन का परिसीमन –

प्रस्तुत शोध कार्य प्रतापगढ़ जनपद में उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् के अंतर्गत संचालित माध्यमिक स्तर के कक्षा 11वीं के विद्यार्थियों तक सीमित है।

शोध विधि –

शोध की प्रकृति के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए वर्णनात्मक शोध प्रविधि कि सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है ।

जनसंख्या –

प्रतापगढ़ जनपद के उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित माध्यमिक स्तर के कक्षा ग्यारहवीं के विद्यार्थियों को लिया गया है ।

न्यादर्श एवं न्यार्शन विधि –

न्यादर्श हेतु तीन सोपानों का अनुसरण किया गया है। प्रथम सोपान में प्रतापगढ़ जनपद के 5 तहसीलों में से तीन तहसील (लालगंज , रानीगंज ,पट्टी) का चयन साधारण यादृच्छिक विधि से किया गया।दूसरे चरण में तीनों तहसीलों के अंतर्गत संचालित माध्यमिक विद्यालयों से 6 विद्यालयों का चयन साधारण यादृच्छिक विधि से किया। तीसरे सोपान में इन विद्यालयों के उपलब्ध विद्यार्थियों में से 25–25 विद्यार्थियों का चयन साधारण यादृच्छिक विधि से कर के कुल 150 विद्यार्थियों का चयन किया गया। इस प्रकार ने न्यादर्श आकार का सृजन 150 विद्यार्थियों से पूर्ण हुआ।

अध्ययन के चर

प्रस्तुत शोध में दो प्रकार के शोध चरों का अध्ययन किया गया –

- सामाजिक–आर्थिक स्थिति
- शैक्षिक उपलब्धि

शोध उपकरण

1. सामाजिक –आर्थिक स्थिति के मापन हेतु शोधकर्ता ने स्वयं 'सामाजिक–आर्थिक स्थिति' मापनी का निर्माण किया है ।

2. शैक्षिक उपलब्धि का निर्धारण विद्यार्थियों के पूर्ववर्ती कक्षा दसवीं में प्राप्त अंकों के आधार पर किया गया है ।

सांख्यिकी विधियाँ–

मध्यमान ,मानक विचलन ,सहसम्बन्धगुणांक, कार्ल पियर्सन सहसम्बन्धगुणांक परीक्षण का प्रयोग किया गया है ।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या –

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् के विद्यार्थियों के सामाजिक –आर्थिक स्थिति का अध्ययन –

सारणी संख्या 1

सामाजिक आर्थिक स्थिति की सांख्यिकी

मध्यमान (M)	50.02
मध्यांक (Md)	49 .00
मानक विचलन (Sd)	7. 08
प्रतिशतांश (P_{25})	45.00
प्रतिशतांश (P_{75})	55.0

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्थिति का मध्यमान 50.02 ,मध्यांक 49.00 एवं मानक विचलन 7.08 है। P_{75} का मान 55 है जिसका तात्पर्य है कि प्राप्तांक 55 से नीचे 75 प्रयोज्य पाए गए।

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन–

सारणी संख्या–2

शैक्षिक उपलब्धि का सांख्यिकी सारांश

मध्यमान (M)	61.52
मध्यांक (Md)	59.00
मानक विचलन (Sd)	6.90
प्रतिशतांक (P_{25})	56.00
प्रतिशतांक (P_{75})	67.75

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 61.52 ,मध्यांक 59.00 तथा मानक विचलन 6 .90 है। P_{75} का मान 67.75 है जिसका तात्पर्य है कि प्राप्तांक 67.75 के नीचे 75 प्रतिशत प्रयोज्य पाए गए ।

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्थिति एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध से सम्बन्धित शोध, आँकड़ों का विश्लेषण और व्याख्या।

शून्य परिकल्पना का परीक्षण

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् के विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्थिति एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है ।

सामाजिक–आर्थिक स्थिति एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कार्ल पियर्सन विधि के द्वारा सहसम्बन्ध गुणांक की गणना किया गया एवं पियर्सन परीक्षण का सांख्यिकीय विवरण निम्न है –

सारणी संख्या 3

चर	न्यादर्श का आकार	स्वतन्त्रता अंश df(N-2)	सामाजिक–आर्थिक स्थिति एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक(r)	परिणाम	सहसम्बन्ध गुणांक की व्याख्या
सामाजिक–आर्थिक स्थिति शैक्षिक उपलब्धि	150	148	.719	.05 स्तर पर सार्थक है	उच्च धनात्मक सहसम्बन्ध

मुक्तांश (148) हेतु .05 सार्थकता स्तर पर सहसम्बन्ध गुणांक का मान = .159

उपर्युक्त सारणी संख्या – 3 से स्पष्ट है कि उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्थिति एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य उच्च धनात्मक सहसम्बन्ध प्राप्त हुआ। (r का मान = .719) । मुक्तांश (148) के .05 सार्थकता स्तर पर सारणी के सहसम्बन्ध गुणांक का मान .159 है और परिगणित सहसम्बन्ध गुणांक का मान .719 है जो की सारणी मान से अधिक है ,अतः यह .05 स्तर पर सार्थक सिद्ध हुआ। शोध आँकड़ों से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर शोधकर्ता ने शून्य

परिकल्पना को अस्वीकृत करते हुए शोध परिकल्पना "उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्थिति एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध है ′′ को स्वीकार किया।

आँकड़ों के अध्ययन से पता चलता है कि ऐसे विद्यार्थी जिनके माता–पिता की सामाजिक–आर्थिक स्थिति अच्छी है।इनका पालन–पोषण अच्छी तरह से किया जाता है, शैक्षिक सुविधाएं भी पर्याप्त मात्रा में मिलती रहती है। ऐसी परिस्थिति प्राप्त होने पर विद्यार्थियों का शैक्षिक उपलब्धि भी उन्नत अवस्था में होता है ।

शोध अध्ययन का परिणाम –

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्थिति एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक से सहसम्बन्ध प्राप्त हुआ। इन दोनों चरों के बीच उच्च धनात्मक सहसम्बन्ध प्राप्त हुआ ।

$(r) = .179$, $df = 148$, $r_{.05} = .159$

शोध अध्ययन का निष्कर्ष –

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्थिति के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया। जो यह स्पष्ट करता है कि सामाजिक–आर्थिक स्थिति शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है। ऐसे विद्यार्थी जिनकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति उच्च होती है उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च होती है। इसी तरह निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाले पृष्ठभूमि से सम्बनधित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि भी निम्न रहती है ।

शैक्षिक निहितार्थ –

- प्रस्तुत शोध अध्ययन से प्राप्त परिणाम द्वारा सम्बन्धित हित धारक जनपद के उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् के माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक – आर्थिक स्थिति एवं शैक्षिक उपलब्धि से परिचित हो सकेंगे ।
- अभिभावकों को जागरूक होने की जरूरत है कि किस प्रकार स्वयं की सामाजिक – आर्थिक स्थिति बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

गुप्ता, एस .पी . (2007) . उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान. इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन.

सिंह, अरुण कुमार (2005) . मनोविज्ञान , समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियां. मोतीलाल बनारसीदास.

Moswikiti , N . (2005) . The influence of socioeconomic status and quality of education on school children's academic performance in south africa. Ph-d, department of Psychology, university of Capetown.

Smith , Krishna, Y. (2011). The impact of paranatal on student achievement dissertation, faculty of usc rossier school of education University of Southern California .

Teodar, M. (2012). The influence of socio-economic status on school performance. Romanian journal experimental applied Psychology, 3(2).

Zuki, N.A.E, Thabet, A.M. & Hassan, A.K. (2014). Effect of peer groups and parents socio-economic status on academic achievement among preparatory schools students at Assuit city. Al-azhar assuit medical journal, 12 (1), 309-332.